

Public Program

Date : 3rd December 1996
Place : Delhi
Type : Public Program
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 06
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahiri

सत्य को खोजने वाले आप सभी साधकों को हमारा नमस्कार। इस भारत वर्ष में अनादिकाल से सत्य की खोज होती रही है, ये हमारे शास्त्रों से ज्ञात होता है। अनेक मार्गों से हमने सत्य की खोज की। अपना देश एक विशेष रूप से अध्यात्मिक है उसका कारण ये कि अपने देश में बहुत सी बातें सुलभ हैं। हम जानते नहीं कि हमारा देश कितना समृद्ध है और कितना पावन है, और यहाँ के लोग कितने सरल और मलरहित हैं। विदेश के लोगों को हम लोग मलेच्छ कहते थे क्योंकि देखते थे कि ये लोग जो यहाँ आये इनकी सारी इच्छायें ही मल की ओर जाती थी। हमारे जमाने में, क्योंकि अब तो हम बड़हे हो गये हैं; तो ये देखा जाता था कि ये जो लोग बाहर से आये हैं, ये कितने उथले हैं, इनकी सारी दृष्टि कितनी उथली है, इनकी जो इच्छायें होती थी वो कितनी उथली हैं। धीरे-धीरे अपने देश पर भी इस पश्चिमात्य संस्कृति की बड़ी जबरदस्त पकड़ आने लगी। उसका कारण यह था कि तीन सौ वर्ष हुए हमारी खोपड़ी पर ये लोग लद गये और हम लोग धीरे-धीरे ये समझने लग गये कि ये बड़े महान हैं जो हमारे देश में आये हैं और हमारे ऊपर राज कर रहे हैं। वास्तविकता में इन्होंने सबको बेवकूफ बना-बना कर ही अपना कार्यसाध्य किया। दूसरे कर्मकाण्डों की वजह से अनेक तरह की विचित्र-विचित्र रीतियाँ-कुरीतियाँ हमारे समाज में आ जाने के कारण हम लोग संस्कृति विहीन बनते गये। हमारी संस्कृति मिटती गई। विशेषकर उत्तर हिन्दुस्तान में मैं कभी भी नहीं सोच सकती थी कि इतने साधक सामने होंगे। इसका कारण हो सकता है कि पूर्वजन्म के आप बहुत बड़े साधक रहे हों और आपने बड़ी साधना की हो जो आप आज सत्य जानने के लिये आतुर हो गये हैं नहीं तो हर तरह के धर्ममार्तण्डियों ने, तथा झूठे लोगों ने इतनी गलत-गलत बातें देश में फैला दी थी और उसके पीछे इतने लोग लग गये थे। आज ऐसा समय आ गया है कि लोग सोचते हैं कि सत्य को ही पाना चाहिये। सत्य की परिभाषा क्या है? जो जानना है वो सत्य क्या है? ये अगर मैं आपको बताऊँ तो आपको विश्वास नहीं कर लेना चाहिये क्योंकि मैं कह रही हूँ। किन्तु इसे परखना चाहिये। सत्य यह है कि आप ये शरीर, बुद्धि, मन, अहंकार और कुसंस्कार आदि नहीं हैं, किन्तु आप स्वयं साक्षात् आत्मास्वरूप हैं। आत्मा क्या है? आत्मा उसी परमात्मा का आप में आया हुआ प्रतिबिम्ब है, वो आप हैं; वो आपको बनना है और बाकी जो कुछ है वो सब व्यर्थ है। क्योंकि जब तक आपने अपने को नहीं पहचाना तब तक आप किसी भी चीज़ की यथार्थता (Reality) नहीं जान सकते। मोहम्मद साहब ने कहा है "अगर तुमने अपने को नहीं पहचाना

तो तुम परमात्मा को नहीं पहचान सकते। इसलिये पहले अपने को पहचानना चाहिये, मायने पहचानना जो है वो एक विशेष स्थिति है। आज आप मानव स्थिति में है और मानव स्थिति से आगे और कोई स्थिति ज़रूर होनी चाहिये नहीं तो आजकल का जो हम संसार में उपद्रव देख रहे हैं और जो हर तरह की नष्ट-भ्रष्ट व्यवस्थाएँ देख रहे हैं तब इसका कोई न कोई ऐसा मार्ग तो होगा ही जिससे मनुष्य का उद्धार हो जाये। उनके उद्धार की बात तो सब साधु-सन्तों ने कही और जितने भी बड़े-बड़े अवतरण हुये उन्होंने कही। फिर वो उद्धार कब होगा और कैसे होगा?

सहज प्रणाली की बात मैंने कही ऐसी बात नहीं। अनादिकाल से इसे सहज कहा जाता था। जो ये प्राप्त करना है यह है सहज। पर पहले जमाने में ऐसे-ऐसे लोग हो गये जो गलत रास्ते पर लोगों को ले जाते थे। ये किताब पढ़ो तो हो जायेगा, गंगाजी में नहओ तो हो जायेगा, नहीं तो और कुछ उपद्रव करो तो हो जायेगा। ऐसी नानाविध उपकरणों से आच्छादित कर दिया पूरी तरह से ढक दिया, उनके दिमाग में भर दिया। अब जैसे छोटी सी चीज़ है, 'सत्य नारायण की पूजा'। अब लोग उसमें दिमाग भी नहीं लगाते कि नारायण तो स्वयं सत्यस्वरूप हैं, उसमें सत्य लगाने की क्या ज़रूरत है? अन्धे जैसी ये सारी प्रथाएँ हमारे यहाँ होती रहीं। ये हिन्दु धर्म में हुआ ऐसा नहीं, ईसाईयों में इससे भी ज्यादा और उससे भी ज्यादा मुसलमानों में। लकीर की फकीरी जो पकड़ ली उससे उनका उद्धार तो नहीं हो सकता, कभी भी नहीं। लेकिन जो कहा गया है कि तुम्हारे ही अन्दर जो है उसे खोजो, उसको प्राप्त करो उस चीज़ को सब भूल जाते हैं। एक तो स्त्रियाचार, ये नहीं खायेंगे, वो नहीं खायेंगे, सर मुंडायेंगे और शरीर पर कुछ कपड़ा नहीं रखेंगे। ये सब करने से हमें परमात्मा प्राप्त होने वाला नहीं। एक सादी-सरल बात को सोचना चाहिये कि परमात्मा आपके पिता हैं, कोई भी पिता चाहेगा कि मेरा बेटा भूखा मरे और जो पिता के पिता, सारे पिताओं के पिता हैं, जिनसे की पिता का स्वभाव, हम पितृत्व की प्राप्त करते हैं वो परमात्मा ये चाहेंगे कि आप अपने सर मुंडाओ और भूखे मरो! किन्तु मनुष्य धर्म के मामले में सोचता ही नहीं कि जो हम धर्म पालन कर रहे हैं उससे क्या लाभ? उससे हमने क्या प्राप्त किया? हम तो जानते हैं कि जितने धर्मावलम्बी हैं जो धर्म के लिये बहुत कठिन से कठिन तपस्या-वगैरह करते हैं। वो इस कदर गुस्सैल होते हैं कि उनके पास जाना मुश्किल है और अगर जाइये तो कोई लकड़ी-वकड़ी साथ लेकर जाइये क्योंकि उनको तो बात-बात पर गुस्सा आता है। अभी मैंने एक पुस्तक में लिखा

कि इसका कारण क्या है इसका वैज्ञानिक (Scientific) कारण क्या है, वैज्ञानिक कारण ये है कि हमारे अन्दर जो जीन्स हैं उसका (data base) आधार है उसमें तीन चीज़ें हैं एक तो कार्बोहाइड्रेट, एक नाइट्रोजन, एक फास्फोरस। जिस वक्त हमारे अन्दर तपस्विता घुस जाती है तब जल-जल कर हमारा पानी खत्म हो जाता है। ये जो पेशियां (Cells) हैं इसका पानी खत्म हो गया। अगर फास्फोरस को आप पानी से निकाल लीजिये तो वो तो भड़क जायेगा ही, और इसलिये लोग भड़क जाते हैं। तो इस कदर की तपस्विता बहुत ही शान्ति के विरोध में है क्योंकि शारीरिक ही ऐसी क्रिया है। आपने सुना होगा कि पहले जमाने में दुर्वाशा ऋषि थे जो शाप देते थे। उनको सिर्फ शाप देना ही आता था। उन्होंने किसी का उद्धार-बुद्धार किया, मैंने सुना नहीं। ये आध्यात्म नहीं है, आत्मा का प्रकाश एक तरफ नहीं चलता चारों तरफ फैलता है और ऐसा आदमी अपनी शान्ति में अपने गौरव में शान्त रहता है। ये स्थिति आने के लिये कोई भी चीज़ छोड़ने की ज़रूरत नहीं। जो भी कुछ संसार में है वो वहां अपनी जगह है। जैसे ही आप अपनी आत्मा को प्राप्त करेंगे, कुण्डलिनी के जागरण से यह जब घटित होगा तब आप देखेंगे कि सब के साथ आपका तदात्म्य है। ऐसी-ऐसी कवितायें सुझेंगी, इतनी सूक्ष्म, ऐसी-ऐसी बातें, दिमाग में आयेगी जो आपने कभी सोचा भी नहीं, कभी आपने देखा भी नहीं, कभी आपने गौर भी नहीं किया। आपके ध्यान में भी वो बात नहीं आई। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिये पहले नानाविध उपचार लोग करते थे, गुरुओं को मानते थे, बहुत कोशिश करते थे पर नहीं बनता था।

ये बात बिल्कुल सही है कि कुण्डलिनी का जागरण बहुत कठिन है। एक बार किसी ने श्री रामदास स्वामी, जो कि शिवाजी के गुरु थे, उनसे पूछा कि कुण्डलिनी का जागरण कितनी देर में होता है तो उनका जवाब था कि 'तत्क्षण'। उसी क्षण लेकिन लेने वाला भी चाहिये और देने वाला भी चाहिये। तो लेने वाले तो मुझे दिखाई दे रहे हैं, सामने बैठे हैं। और ये जमाना ऐसा आ गया इस जमाने में आदमी एक कशमकश में इतना ज्यादा है। ये जमाना ही कलयुग की भोर कलाओं से त्रस्त मानव का एक बहुत ही जालिम जमाना है। एक-दूसरे से बैर रखना, एक-दूसरे को तकलीफ देना, एक-दूसरे पर जबरदस्ती करना, वो चाहें घर-गृहस्थी में हों, चाहें बाह्य में हों, वो राजकारण में हो कि और किसी भी प्राण में हो, ये कार्य होता है। और बहुत से लोगों को ये एहसास ही नहीं होता कि हम गलत काम कर रहे हैं, कि हम किसी पर जबरदस्ती कर रहे हैं या किसी को हम मार रहे हैं पीट रहे हैं। और ये हर एक धर्म में हो रहा है। ऐसा कोई धर्म नहीं जहां मार-पीट नहीं, जहां आफत नहीं और लोग इन बातों को मानने को तैयार नहीं है कि उनका धर्म सारे धर्मों से ऊंचा नहीं है, कोई विशेष धर्म नहीं है। अगर आपका धर्म ऐसा विशेष है तो क्यों मर रहे हो? क्यों ऐसी हालत हो रही है? क्यों तकलीफ में पड़े हो? हमारा धर्म सबसे ऊंचा है? आप अगर कल दूसरे धर्म में पैदा होते तो उस धर्म के लिये आप ये सब बातें कहते। यानि धर्म को लेकर लड़ना ये परमात्मा के लिये बड़ी भारी लांछना है। बहुत

बड़ी लांछना। वो जमाना था उस जमाने में जैसी ज़रूरत थी उन लोगों ने वो-वो बात की। पर उनको अदल-बदल करके, ये वो करके और दूसरी बातें सामने लाकर के और परमात्मा के नाम पर लड़ना इससे बढ़कर के कोई पाप नहीं। दूसरो को मारना। भगवान के नाम पर पीटना, भगवान के नाम पर। जो परमात्मा क्षमाशील, दयाशील, करुणा के सागर हैं उनका नाम लेकर के ऐसा दारुण कार्य करना किसी भी धर्म की लांछना है। किस चीज़ के लिये लड़ रहे थे, कोई जमीन के लिये लड़ रहा है। ऐसे लोग जो निराकार में विश्वास करते हैं वो जमीन के लिये लड़ रहे हैं। अरे जब आपका निराकार में विश्वास है तो ये जमीन के लिये लड़ रहे हो? छोड़ो। लेकिन ये सब कहने से भी कुछ नहीं होने वाला। जिन्होंने ऐसा कहा वो निष्फल हुआ। किसी ने सुना थोड़े ही, किसी ने माना नहीं। ऐसे भाषा ही रह गई, बातें ही रह गई लेवचर ही रह गया। लेकिन उसका कोई असर नहीं। कारण ये कि मनुष्य अंधकार से अज्ञान में पड़ा हुआ है। तब कबीर ने कहा, "कैसे समझाऊँ सब जग अन्ध" वही बात थी ये दिल्ली, मैं आपसे कहती, मैं पहले सोचती थी यहां सर पटकना बिल्कुल बेकार है। लेकिन उसी दिल्ली में, मेरी जीवित अवस्था में मैं देखती हूँ, न जाने किन शब्दों में, अपने आनन्द का वर्णन कर सकती हूँ। इस जगह जहां कुण्डलिनी का नाम किसी ने सुना नहीं था, किसी से कुण्डलिनी की बात करो वो कहते थे कि आप Horoscope कुण्डली देखते हैं? मैं अपना Horoscope (कुण्डली) लेकर आता हूँ। सा मैं कहती थी यहां कैसे होगा? कुछ मालुमात नहीं। लेकिन बाद में मैंने पाया कि यहां कोई पूर्वजन्म के बहुत बड़े साधु-संत रहे होंगे, खोजने वाले होंगे, ऐसे बड़े ही कोई धार्मिक लोग होंगे जो इस दिल्ली में आ गये और अब उनको ये इच्छा हो रही है कि हम अपनी आत्मा को प्राप्त करें। वो जो उनको पूर्वजन्म की एक आस थी वो आस जागृत हो गई नहीं तो मैं समझ नहीं पाती। मेरी शादी दिल्ली में हुई, मैं तो सोचती थी कि हे भगवान क्या शहर है यहां तो लोग सिवा कपड़े के और जेवर के और पैसों के और सत्ता के बात ही नहीं करते। कोई बात ही नहीं करते और पूछते ही नहीं। उसी दिल्ली में आज आप लोग अपने आत्मासाक्षात्कार के लिये आये हुए हैं। ये परम भाग्य है इस देश का। इसका सीभाग्य है। क्योंकि भारतवर्ष एक बहुत महान देश है एक योगभूमि है। लेकिन हम इसके बारे में कुछ जानते ही नहीं। जब हम इस देश के बारे में कुछ जानते ही नहीं तो इससे हम प्रेम कैसे करें, इसके प्रति हम जागरूक कैसे होंगे? मैं लन्दन जैसी जगह में रहती थी, वहां का इंग्लैंड देश इतना सा है उसमें कुछ कहना चाहिये कि हिन्दुस्तान जैसे बहुत कम लोग हैं। हरेक आदमी चप्पा-चप्पा जानता है। हरेक बात मानता है। और बड़े गौरव से वहां कोई है नहीं गौरवशाली, सच बात तो यह है। मैंने किसी से पूछा कि ये तुम कहाँ से कांच का बर्तन खरीद लाये तो उसने बताया कि वो फ्लां जगह है North में, ऐसा है और ये वो फैक्टरी है और उसमें बनता है। मैं हैरान हो गयी वहां पड़ोसी आपस में बात नहीं करते। पर हर आदमी जानता है कि ये देश है। हर एक चीज को जानता है चाहे वो पढ़ा हो, नहीं

हो। एक देवीजी थी देहात में। हम उनके यहां गये वो ये नहीं जानती थी कि रूस (Russia) कहाँ है, पर लन्दन के बारे में, हालाँकि देहात में रहती थी, सारे देश के बारे में, देश क्या है, वो इतना छोटा सा, सारे देश के बारे में एक-एक चीज, एक-एक बात जानती थी। और अपने यहां तो हम लोग सब साहब हो गये, रहते हैं हिन्दुस्तान में, या क्या हो गया पता नहीं? किसी के बारे में कोई बात किसी को मालूम नहीं। अड़ोसी-पड़ोसियों की बस बुराई करते थे ये। मैं पहले की बात बता रही हूँ और कुछ पूछो तो हमें नहीं मालूम। बहुत गुस्से से मैंने कहा भई फलाने कहाँ रहते हैं? अरे वो क्या क्लर्क है क्या? वो तो पता नहीं, वो तो क्लर्कों की बस्ती है। तो आप कौन हैं? मैं 'हैड क्लर्क' हूँ। मैंने कहा ठीक है इस प्रकार इतना धमंड लोगों में था, इतना धमंड और जहाँ-तहाँ छोटी-छोटी बातों पर सबको बड़ा अपने बारे में मैं ये हूँ, मैं वो हूँ। मैं फलाना हूँ, मैं ठिकाना हूँ। पुरानी दिल्ली में, वही हाल नई दिल्ली में! और किस बात का धमंड था सो मुझे मालूम नहीं, लेकिन एक तरह का ऐसा वातावरण था, संभ्रात जिसे कहते हैं, illusion, संभ्रात सबको कोई न कोई illusion में बैठा हुआ था। मैं ये हूँ, मैं वो हूँ, मैं वैसा हूँ। अगर आप पुरानी दिल्ली में जाइये और पूछिये कि फलानी दुकान कहाँ है? क्यों साहब हमारी दुकान क्या बुरी है? यहाँ बैठिये आप। अरे भई आप ऐसी बात कर रहे हैं तो कौन बैठेगा? इस कदर कशमकश, इस कदर आपसी बैर, इस कदर आपसी बुराई! वही दिल्ली आज सुव्यवस्थित होना चाहता है। आपस में प्रेम करना चाहता है। उस एकाकारिता को प्राप्त करना चाहिए जो परमात्मा को देन है। इससे आप हो बताइये मुझे क्या लग रहा होगा? बहुत दुनिया देखी है। और इन दिल्ली वालों को मैं हजार बार नमस्कार करती हूँ।

अब आप लोग अपनी जिम्मेदारियाँ भी समझ लें। आप ऐसे शहर में रहते हैं कि जिससे अपने भारतवर्ष को शौहरत सारी दुनिया में जानी जाती है। दिल्ली में जो कुछ भी होता है वो सारी दुनिया में जाना जाता है। क्या हो रहा है यहाँ पर? यहाँ के लोग कैसे हैं? एक आदमी अगर दिल्ली में मर जाए तो सारी दुनिया में शौहरत हो जाएगी पर 25 आदमी और कहीं मर जाएं तो उससे कोई मतलब नहीं। तो इसका मतलब ये तो हो गया कि आप महत्वपूर्ण हैं। और आपका महत्व ये है कि इस देश के प्रतिनिधि हैं। इस योगभूमि के, इस भारतवर्ष के आप प्रतिनिधि हैं। आज आप आत्मसाक्षात्कार के लिए आए हैं या बहुतों को हो भी गया होगा। किन्तु ये समझ लेना चाहिए कि जो-जो आत्मसाक्षात्कारी हैं उनका अपना-अपना एक विशेष स्थान होता है। और दिल्ली वालों का भी एक विशेष स्थान मैं मानती हूँ कि राजधानी में आप बैठे हैं और इस राजधानी में जो आत्मसाक्षात्कारी हों जो आत्मा को प्राप्त करें, उनके अन्दर एक विशेष वैभवशाली शक्ति का प्रदर्शन होना चाहिए। और वो वैभवशाली शक्ति है प्रेम और सत्य। सत्य और प्रेम दोनों एक हैं। जब आप सत्य को जानेंगे तो आप अपने आप ही शान्त हो जाएंगे। जब आपने सत्य को जान लिया तब फिर विक्षुब्ध होने या disturb होने की कौन सी बात है? कुछ भी नहीं। क्योंकि आप जानते हैं सत्य क्या है। पर

सत्य और प्रेम दोनों चीज एक हैं। जिसने सत्य को जाना वो प्रेम से ही जान सकते हैं। जैसे आप किसी को प्रेम करते हैं तो उसके बारे में आप क्या जानते हो कि इनको क्या अच्छा लगता है। क्या बुरा लगता है। क्या कहना चाहिए और क्या नहीं कहना चाहिए, क्या खाते हैं, क्या पीते हैं, सब चीज आप जानते हैं। उनके बोलने का इशारा क्या है? सब चीज आप जानते हैं। और उसके लिए लगन रहती है। तो जब आप प्रेम से सत्य को जानियेगा तभी वो सत्य है। और अगर आप चाहें कि आप प्रेम को हटा दें तो सत्य बुझ जाएगा, सत्य रह नहीं सकता। क्योंकि सत्य की जो शिखा है उसकी जो दीप्ति है वो प्रेम के ही तेल पर चलती है। और प्रेम का मतलब ये नहीं कि हाँ भई मैं तो अपनी लड़की से प्यार करता हूँ, मैं लड़कें से प्यार करता हूँ, मैं भाई से प्यार करता हूँ। मैं घर से प्यार करता हूँ, ये प्यार नहीं है। इसके लिए एक शब्द संस्कृत में "निर्वाण्य" निलेप मायने अलिप्त detached! और आप लोग कहेंगे कि माँ प्रेम अगर निलेप हो जाए तो बहुत सी बातें छूट जाएंगी। ऐसा नहीं है। एक पेड़ की ओर देखिए उसके प्रेम की धारा, उसका रस सारे पेड़ में चढ़ता है। हर जगह, उसके मूल में आ जाता है, उसको शाखाओं में जाता है, पत्तों में जाता है, फूलों में जाता है, फलों में जाता है। लेकिन रुकता नहीं। या तो वो विलीन हो जाता है आकाश की ओर या वापिस पृथ्वी में चला जाता है। वो किसी जगह रुकता नहीं। गर वो रुक जाए तो समझ लीजिए जैसे उसे एक फल पसन्द आ गया या एक फूल बड़ा पसन्द आ गया तो वो पेड़ ही मर जाएगा और फल फूल सभी मर जाएंगे। इसलिए जिसका जो देना है उसका वो देना चाहिए। जिसको जो रस देना है वो अपने घर में गृहस्थी में, समाज में अपने देश में और सारे विश्व में जिसको जो देना है वो दीजिए। लेकिन उसमें लिपट न जाइये। उसमें लिपटना जो है वो एक तरह से कहना चाहिए जिसे अंग्रेजी obsession कहते हैं चिपकना, अब वो कोई सी भी चीज हो उसमें प्रेम की शक्ति क्षीण हो जाती है बढ़ेगी नहीं। कहते हैं "उदार चरितनाम वसुधाएव कुटुम्बकम्" सारी वसुधा ही, सारी धरा ही उसका कुटुम्ब है। ये प्रेम की महिमा है। इस प्रेम की महिमा को अगर आपने जान लिया तो आपको आश्चर्य होगा कि आत्मा के दर्शन से ये घटित होता है, मैंने देखा है कि जब लोग सहजयोग में आते हैं तो सबसे पहले वो देखते हैं कि मेरे अन्दर क्या वृत्तियाँ हैं? मुझे आकर बताते हैं कि माँ ये देखिये मैं महामूर्ख हूँ, मैंने ऐसी-ऐसी मूर्खता करी। ये की। मैंने कहा अच्छा अपना confession मुझे दे दो, तुम लिख कर रख दो। फिर मैं ऐसा बना, मैंने उसे टगा, मैंने उससे जबरजस्ती करी। ये सब मुझे बताते हैं। पहले मुझे दिखाई नहीं देता अब तो माना मेरे सामने मेरा ये आत्मा एक शीशा बन कर खड़ा हो गया है और अब मुझे मेरी गलतियाँ सामने आ रही हैं। और मैं सोचता हूँ कि मैं इतना खराब था। तो मैंने कहा अच्छा जो हो गया सो बोल गया। भूतकाल तो है नहीं, छोड़ो उसे खत्म हो गया। अब वर्तमान में तुम खड़े हो। वो सब स्वच्छ हो गया और जिस तरह से कमल गंदे पानी से निकल कर सुरभित होकर ऊपर आ जाता है और सारे वातावरण को सुरभित करता

है उसी प्रकार अब तुम हो गये। भूल जाओ। इसलिए जो गत है जो भूत है उसे भूल जाओ। पर वो भूल ही जाता है बाद में। धीरे-धीरे उसकी प्रगति होती है तो भूल जाता है। मैं Russia में थी, तब वहां coup (राज्यविप्लव) हुआ, तो मैंने सहजयोगियों से कहा कि अरे तुमको कोई घबराहट नहीं हो रही, तुम्हारे यहां कू हुआ है पता नहीं कौन राज्य में आये, क्या हो! कहने लगे माँ हम तो परमात्मा के साम्राज्य में बैठे हैं, हमको क्या डरना? साफ कह दिया उन्होंने। हम तो परमात्मा के साम्राज्य में बैठे हैं। ये एक स्थिति है, ये बकवास से नहीं होता। लोग बड़ी-बड़ी बातें करेंगे, ये करेंगे वो करेंगे ऐसे नहीं। सबसे बड़ा गुण मनुष्य में जो आता है कि वो निर्भयता से अपने को देखता है, उसको भय नहीं लगता। वो ये नहीं सोचता कि मैं ये कैसे सोचूँ कि मैं क्या हूँ। क्योंकि वो अपने से अलग हटकर है। वो जो पुराना था वो उतर गया, और अब नया सामने आ रहा है, और ये जो नया जीव सामने आ रहा है ये अत्यंत सुन्दर है और गौरवशाली है। स्वाभिमानि है। ये नहीं कि ये अपने को सबके चरण-छू महाराज बने, ये बात नहीं। इसमें अपना स्वाभिमान है और उस स्वाभिमान में जो स्व है वही आत्मा है। इसी 'स्व' के तन्त्र को जानना ही सहजयोग है। जिसने इस स्व के तन्त्र को जाना वही स्वतंत्र हो जाता है। स्व का तन्त्र का मतलब ये कि अपने आत्मा के तन्त्र को जानना। अभी तक तो हम इस बुद्धि से या अपने संस्कारों से, पढ़ी हुई बातों से चिपके हुये थे। अब हमारे अन्दर आत्मा का जागरण हो गया है और उस जागरण से हम सब कुछ स्पष्ट देख रहे हैं। पहले तो अपने को देखिये, फिर अपने समाज को देखिये। अब हमारे यहां बहुत से लोग हर एक धर्म से आये हैं, मुसलमान हैं, हिन्दु हैं, इसाई हैं, बौद्ध हैं, महावीर के लोग हैं, सब तरह के लोग इस सहजयोग में आये हैं। और सबसे पहले मैंने ये देखा कि उन्होंने अपने समाज के बारे में मुझे बताया। जैसे कोई जैनी आये तो उन्होंने बताया माताजी ये जैनियों का दिमाग ठीक करो। कोई सिक्ख आये तो उन्होंने बताया भाई सिक्खों का दिमाग ठीक करो। कोई इसाई आये तो उन्होंने कहा कि माँ इन इसाईयों को कब ठीक करोगी आप? हर एक में मैंने ये चीज देखी कि फौरन वो अपने से हटकर के अपने समाज को देखने लगते हैं, अपने घर को देखने लगता है, फिर देश को देखने लगते हैं और फिर पूरे विश्व को, सारे नोबल प्रश्नों को लेकर के वो उलझ जाते हैं कि माँ अब ये प्रश्न है। अब वहां ये हो रहा है। आपको कुछ न कुछ करना होगा। आपको देखना होगा। मैंने कहा कि अब तुम पूरे दुनियाभर की परेशानी मुझ पर डाल रहे हैं। आप ही कर सकते हैं इसको आप करिये, आपको ठीक करना है। ये आदमी ठीक नहीं उसको ठीक करिये। इस तरह से उलझ गये, किस चीज में कि जो सारे विश्व का प्रश्न है। बताईये एक सर्वसाधारण मनुष्य, एक खेतीहर है वो सिर्फ अपनी खेती की बात करें तो समझ में आता है, पर वो भी देखकर के कहने लगा कि अच्छा ये राबिन को मार डाला इन लोगों ने। क्यों मार डाला? माँ आप इनकी शान्ति के लिये कुछ करें। इनकी शान्ति का ठिकाना लगाओ। मैं हैरान हो गई कि इसने कहाँ से पढ़ा। क्या अखबार में आया था? अखबार में

आया था कि एक शान्ति के दूत को मार डाला। आंखों में आंसू। कहाँ वो इन्होंने उन्हें कभी देखा भी नहीं, जाना भी नहीं। कौन था, कौन नहीं। पर अखबार में पढ़ा होगा। इस प्रकार एक सारे ही विश्व के साथ तदात्म्य। विश्व का जो आत्मा है 'विश्वात्मा' उससे एकाकारिता घटित होती है। और जो वो आत्मामुखी है वही मनुष्य अपने अन्दर महसूस करता है। ऐसा वो विशाल हृदय हो जाता है। उसको अपनी छोटी-छोटी बातें, छोटी-छोटी यातनायें नहीं समझ आतीं। वो ये नहीं सोचता कि मुझे ये तकलीफ है, ये परेशानी है, बिल्कुल नहीं सोचता। उसको लगता है कि ये विश्व के प्रश्न कैसे ठीक होंगे? ये विशालकाय हैं। और फिर ऐसे आदमी के अन्दर शक्ति आ गयी, वो भी परमात्मा की शक्ति। जब वो ये सोचने ही लग गया, वो प्रश्न भी ठीक हो जाता है। उसकी इस विशालता से वो प्रश्न भी अपने आप हल हो जाता है। बहुत से लोगों को मैंने देखा है कि माँ देखिये ऐसा हुआ एक बार कि हमें बड़ा प्रश्न पड़ा कि फलाने देश में ऐसी लड़ाई हो गई। तो हम लोगों ने सोचा कि प्रार्थना करें, ध्यान (Meditate) करें, कुछ करें, इच्छा करें तो दूसरे दिन अखबार में आया कि सब शान्ति हो गयी। अब कोई विश्वास नहीं करेगा कि ऐसा कोई कर सकता है। लेकिन क्यों नहीं विश्वास करता मनुष्य? क्योंकि मनुष्य अपनी विशालता को अपने बड़प्पन को, जानता नहीं। जब तक उसमें अपने को पहचाना नहीं, वो अपना बड़प्पन कैसे जानेगा? वो कैसे जानेगा कि वो क्या चीज है, उसकी गरिमा क्या है और उसकी शक्तियाँ क्या हैं। आत्मदर्शन के बाद ही आपको ये सब प्राप्त हो सकता है।

कुण्डलिनी के बारे में तो आप जानते हैं, चक्रों के बारे में भी आप जानते हैं कि क्या है। चक्रों के जागरण से क्या अभिव्यक्ति होती है। अभी अगर हम ये बात करें कि इसमें ये तंदरुस्ती अच्छी होती है उससे वो तंदरुस्ती अच्छी होती है तो लोग कहेंगे कि आप क्या अस्पताल खोलें बैठी हैं? सिर्फ अपनी तंदरुस्ती अच्छी करना ये सब सहजयोग का कार्य नहीं है। ये जमाने अब गये। पहले जो आता था वो अपने दूर-दूर के सम्बन्धियों को रोग मुक्त करने को कहता था। फलाना शराब पी रहा है उसे आप ठीक कर दो। अब वो नहीं रहा। अब मुझे हैरानी होती है कि मनुष्य कितना विशाल हो रहा है इस देश में। इस विशालता का प्राप्त कर रहा है। अब आप ही सोचिये एक जमाने में इस देश में ऐसे लोग थे, ऐसे मनन करने वाले थे, ऐसे द्रष्टा लोग थे जो विश्व के प्रश्न को लेकर चलते थे। छोटे-छोटे आँछे सवालियों के पीछे नहीं दौड़ते थे। अब इन लोगों की आप व्याख्यायें सुने, इन लोगों का दर्शन ले तो इसी देश में ऐसे महान लोग हो गये जिन्होंने हमेशा महान बातें सोची, महान कार्य किये। अब हम लोग पता नहीं कैसे, किस गत में फँस गये हैं कि उस महानता को असंभव समझते हैं। हो ही नहीं सकता। हम ऐसे कैसे हो सकते हैं? क्यों नहीं? वो जो एक जमाने में लोग थे जो लोग एक जमाने में इन अंग्रेजों से लड़ सकते थे, जिन्होंने देश के लिये इतना त्याग किया, क्या आज हमारे देश में वापिस नहीं आ सकते? वो और कौन से देश में जायेंगे, जिन्होंने इतना प्यार किया वो क्या इस देश में

फिर से जन्म नहीं ले सकते? जिन्होंने इतना त्याग किया, देश के लिये बहुत सारी यातनायें सहनीं, देश के लिये, आज वो लोग फिर सहजयोग में से जागृत होंगे। मुझे पूर्ण आशा है कि वो अपने देश को प्यार करेंगे और देश की व्यवस्था ठीक करेंगे, शान्ति, अमन आदि सब चीज़ें लायेंगे। उसके बाद जब ये देश ठीक हो जायेगा तो और भी देश देखा-देखी ठीक हो जायेंगे। हमारे सामने तो विश्व के प्रश्न हैं ही, किन्तु ये सोचना है कि इसमें कौन-सा देश अगुआ होता है। कौन सा देश इसका झण्डा उठाता है। कौन से देश के लोग ये कहते हैं कि हम एक ऐसा आदर्श देश बना कर दिखायेंगे, जहां लोग ऊँचे, आध्यात्मिक स्तर पर, हमारे सहजयोग आध्यात्म का ये मतलब नहीं कि बोंबों को छोड़, बच्चों को छोड़ और जंगल में भाग। बिल्कुल भी नहीं। अपने ही अन्दर अपने दर्शन करके इस उच्च स्थिति को प्राप्त करना, इस विशेष स्थिति, जो हमारे लिये बनी हुई है, जिसे हम प्राप्त कर सकते हैं। ऐसी कोई कठिन बात नहीं, ऐसा कोई त्याग भी किसी चीज़ का करने की ज़रूरत नहीं, सिर्फ़ मूर्खता का त्याग करना है, सिर्फ़ दुर्बुद्धि का त्याग करना है। और संकीर्णता जो आपको स्वार्थी स्वभाव (Self isntemperament) है उससे दूर भागना है। उसको समझना चाहिये, कि ये मेरे अन्दर एक संकीर्ण बात है। उसके बाद आप देखियेंगे कि अपने आप आपके प्रश्न जो हैं खुलते जायेंगे। आप परमात्मा पर विश्वास करते हैं। क्या सोचते हैं कि आप मंदिर में गये नमस्कार कर लिया, गुरुद्वारे गये नमस्कार कर लिया। उससे नहीं होने वाला। अन्दर में ये विश्वास जो हम करते आये हैं वो धर्म हमारे अन्दर नस-नस में बस जाता है। इस धर्म की महिमा ऐसी है कि इस धर्म के कारण अनेक महात्मा इस देश में आये। मैं तो कहती हूँ कि इससे ज्यादा तो किसी देश में हुए ही नहीं। इसका मतलब अपना भारत वर्ष एक महान योगदान सारी दुनिया को दे सकता है।

मैं अभी चीन गई थी, तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि चीन के लोग कैसे तो सार्वजनिक रूप से चाहे हमारे विरोध में हों, कहते हैं हम तो हिन्दुस्तान से बहुत कुछ अपेक्षा रखते हैं। बहुत कुछ आशा करते हैं। मैंने कहा क्या? बोलें आध्यात्म हम जानते हैं कि वहां आध्यात्म की खान है। लेकिन अभी तक किसी ने वो बताया नहीं। हमारा जो स्टॉल था उसमें लाइने पे लाइने, कतारें पे कतारें लगी हुई थीं, जहां लोग आकर पूछते थे कि क्या है 'सहजयोग'? पेपर तक में आया। अमेरिक भी हैरान हो गये कि इसमें क्या रखा हुआ है। यहां क्यों इतने लोग इकट्ठा हो रहे हैं। और आप देख रहे हैं आपके सामने इतने लोग बैठे हैं; विदेश के भी, जो कि आज सहजयोग को प्राप्त करके भारत की गौरवगाथा गा रहे हैं। आपको भी इस ओर नज़र करनी चाहिये।

सहज में आपको पार तो होने में कोई मुश्किल नहीं है क्योंकि आप तैयार हैं, जैसे कोई बीज होता है। आप उसको पृथ्वी माता में डाल दीजिये, तो वो पनप जाता है, क्योंकि बीज में भी शक्ति है और मां में भी शक्ति है। लेकिन उसके बाद वृक्ष होने में देर लगती है। वो ज़रूरी है क्योंकि आपकी विशालता तभी दिखाई देगी जब आप वृक्ष

स्वरूप हो जायेंगे। उसके लिये ध्यान करना और ध्यान में उतरना होगा। उथलेपन से सहजयोग नहीं किया जा सकता। इसका मज़ा तब आता है जब आप आध्यात्म में डुबकियां लगाते हैं। उसमें पूरे गहरे बैठ जायें, तभी आपको सहज का मज़ा आयेगा और तभी आप समझ जायेंगे कि आप क्या हैं, और आप कितने विशाल हैं। और सब होते हुये भी अन्दर से आप में एक तरह कि ऐसी शान्ति और समाधान विराजमान रहेगा कि इस शक्ति के द्वारा ही आप अपने चित्त से ही चीज़ ठीक कर सकते हैं। ये मैं आपको बता सकती हूँ कि आपका चित्त ही इतना सुन्दर हो जायेगा कि उस चित्त का जहां भी ध्यान जाये, उस चित्त से आप बहुत सी चीज़ें ठीक कर सकते हैं। तो थोड़ा सा अपने संकीर्ण वातावरण से निकलकर, अगर आपको और ऊँची दशा में लाना है, ध्यान धारणा ज़रूर करें। ध्यान ही से सब चीज़ व्यवस्थित होती है। अब ये ही बात है कि हमसे लोगों ने कहा कि आदमी लोग तो बहुत ध्यान करते हैं और औरतें कम करती हैं। आश्चर्य की बात है। मैं एक औरत ही हूँ, मैं भी स्त्री हूँ, और मेरा भी घर है, मेरे बच्चे हैं। सब कुछ है। सबको चलाते हुये भी ध्यान से ही मैंने ये क्रिया प्रणाली दूँद निकाली कि हज़ारों लोग पार हो सके। तो मैं ये विनती कहूँ कि औरतें अगर घर में ध्यान करें तो बच्चे भी ध्यान करेंगे। बच्चों को संभालने के लिये ध्यान करना ज़रूरी है। पति तो करे ही क्योंकि पति तो जो है वो चालना करता है घर की। और स्त्री जो है उसका रक्षण करती है। तो अगर पति ने ध्यान-धारणा करी तो पत्नी भी करे, बच्चे भी करे। फिर सबसे बड़ी सहजयोग की बात ये है कि ये सामूहिक है, अकेले नहीं कि मैं अपने घर में पूजा करता हूँ मां तो भी मुझे बीमारी हो गई। अकेले में नहीं। जो सामूहिकता में आप आयेंगे, सामूहिक में सहजयोग को मानेंगे तब आज का, वर्तमान का सहजयोग है। वो जमाने गये जब एक आदमी कहीं पार हो जाता था। हज़ारों को पार करना है, लाखों को करोड़ों को पार करना है। तो हमें सामूहिक होना पड़ेगा और सामूहिकता की शक्ति बहुत ज़बरदस्त है।

मुझे खुशी है कि दिल्ली ने सहजयोग को अपने सिर-आँखें पर उठा लिया है और समझा है। इतने संवेदनशील इतने Sensitive लोग इस दिल्ली में हैं। बड़ी हैरानी की बात है कि जिस महाराष्ट्र में इतने संत-साधु हो गये वहां के लोगों को इतनी अकल नहीं, मैं यह देखकर हैरान हूँ। वो लोग सोचते हैं कि हमें सब मालूम है। सब हमने जाना है। वहां नवनाथ हुये सब बेकार गये। वहां इतने साधु-संत हुये सब बेकार गये। और इस तरह से जो आप लोगों ने इसको समझाया, बनाया, इसको बढ़ाने के लिये अपना व्यक्तिगत Individual ध्यान भी करना चाहिये और सामूहिक ध्यान में समावेश करना चाहिये। मैं मानती हूँ कि हमारे पास जगह की कमी है। और उसके लिये कुछ करना चाहिये। धीरे-धीरे सब कुछ हो जायेगा। लेकिन जहां भी सामूहिक आप हो जायेंगे फिर आप और कोई बात करेंगे ही नहीं, सहज की ही बात करेंगे। अभी तो शुरुआत है और इससे आगे हर जगह हमारा प्रोग्राम होने वाला है। जो लोग आ सकते हैं ज़रूर आयें।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।